5

सबसे बड़ा प्रकाशन

(यूहन्ना 14)

''मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं। और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिए कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। ... जिस के पास मेरी आज्ञाएं है और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रकट करूंगा। उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उस से कहा, हे प्रभु क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रगट किया चाहता है, और संसार पर नहीं। यीशु ने उसे उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ बास करेंगे। जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं बरन पिता का है, जिस ने मुझे भेजा'' (आयतें 18-24)।

अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले गुरुवार की रात को अटारी वाले कमरे में अपने प्रेरितों से बातें करते हुए यीशु ने उन्हें स्तब्ध कर देने वाली सच्चाई बताई कि वह उन्हें छोड़ रहा है। उन्हें धुंधला सा समझ आया कि वह अपने पिता के पास जा रहा है (14:12), परन्तु बाकी सब बातें अस्पष्ट सी लगीं। हवा में चारों ओर उलझन, घबराहट और अनिश्चितता भर गई। पक्के तौर पर उससे अलग होने की पीड़ा ने उन्हें दुख के भाले से छेद डाला। हम क्या करेंगे? हमारा क्या होगा? हम इससे कैसे निपटेंगे? जैसे सवाल उनके मनों में आए होंगे। विगत तीन वर्षों में यीशु की व्यक्तिगत उपस्थिति ने उन्हें मज़बूत शान्ति दी थी। वह उनका चरवाहा था और वे उसकी भेड़ें थीं। उसके पीछे चलने के लिए उन्होंने सब कुछ छोड़ छाड़ दिया था और अब उन्हें लगा कि उन्हें अकेले छोड़ दिया जाने वाला है।

उनके घबराए हुए मनों को समझते हुए यीशु ने उन्हें इस प्रतिज्ञा के साथ आश्वासन दिया कि वे उसे फिर से अलग रूप में और अलग तरीके से देखेंगे। उसने उन से कहा, ''मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा।''''मैं तुम्हारे पास आता हूं'' (14:18)। ''अनाथ'' (*orphanos*) के लिए उसका शब्द नये नियम में यहां और याकूब 1:27 में केवल दो बार इस्तेमाल हुआ है। अन्य शब्दों में प्रेरितों को बिना सहायता के नहीं छोड़ा जा रहा था।

''थोड़ी देर रह गई है'' यानी अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान और पिन्तेकुस्त के दिन के बाद उसने उन पर प्रगट होना था। ''थोड़ी देर रह गई है,'' उसने उनके साथ बड़ी सहजता से बात करते हुए कहा, ''फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे; इसलिए कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे'' (14:19)। यह प्रकाशन जिसकी उसने पहले बात की थी उनके लिए था

न कि संसार के लिए था। उसने शारीरिक रूप में जिसमें उन्होंने पहले देखा था पृथ्वी पर नहीं लौटना था; इसके विपरीत जी उठे मसीह ने अपने आपको प्रेरितों पर और उन सब पर जो उसके आज्ञाकार थे प्रगट करना था।

उनके लिए उसे फिर से देखने का समय आने पर उन्होंने उसके सम्बन्ध में ज्ञान के और बड़े क्षेत्र में भी प्रवेश करना था। पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप में उन्हें यह समझ आना था कि वह और पिता एक ही हैं। उन्हें यह सच्चाई थोड़ी सी समझ आई थी पर उन्हें इससे भी अधिक समझ में प्रवेश करना तय था। इसके अलावा उन्हें यह समझ आ जाना था कि वे वास्तव में उसमें रह रहे हैं और वह सचमुच में उन में रह रहा है। ''उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुम में,'' उसने कहा (14:20)।

न केवल उनके ज्ञान में बढ़ोतरी होनी थी बल्कि उसके साथ उनका सम्बन्ध भी और व्यक्तिगत होना था। उन्होंने सबसे बड़े प्रकटीकरण के अनुभव अर्थात उस प्रकाशन का अनुभव करना था जिसकी राह प्रभु की पृथ्वी की सम्पूर्ण सेवकाई देखती थी। यीशु ने उन्हें बताया, ''जिस के पास मेरी आज्ञाएं हैं और व उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा'' (14:21)। उसका प्रकटीकरण व्यक्तिगत और निजी प्रकाशन होना था।

उनके लिए इन शब्दों को समझना कठिन था। यहूदा (जो इस्करियोती नहीं था) ने उससे कहा, ''हे प्रभु क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रगट किया चाहता है, और संसार पर नहीं'' (14:22)। यहूदा को लगा कि यीशु के लिए यह योजना भविष्य में किसी समय अपने आपको संसार पर प्रकट करने की थी, पर यहूदा (अधिकतर लोगों की तरह) ने योजना को गलत समझा था। यीशु के लिए परमेश्वर की बड़ी योजना आकर उन लोगों के साथ रहने की थी जो उसकी आज्ञा मानते हैं। इसलिए, यीशु ने यहूदा से कहा, ''यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे'' (14:23)।

इसका अर्थ यह है कि सबसे बड़ा प्रकटीकरण परमेश्वर पिता और पुत्र यीशु का हमारे साथ रहने के लिए आना है। वे हमारे पास आकर अपना ''निवास'' बना लेते हैं। मानवीय अनुभव में इसके जैसी और कोई बात नहीं है। जन्म के समय यीशु को ''इम्मानुएल'' नाम दिया गया था, जिसका अर्थ है ''परमेश्वर हमारे साथ'' (मत्ती 1:23)। नये नियम के साथ साथ पुराना नियम भी हमें इस गम्भीर निष्कर्ष तक ले जाता है कि परमेश्वर ने हमारे साथ वास करने की योजना बनाई। यूहन्ना ने लिखा, ''जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है'' (1 यूहन्ना 1:3)। यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था:

> और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा (14:16, 17)।

यह सच्चाई कितने अद्‌भुत ढंग से प्रोत्साहित करती है परन्तु यह प्रश्न खड़ा होता है कि ''ऐसा कैसे होता है?'' हम जानते हैं कि संसार इस वास को अनुभव नहीं कर सकता, पर इसमें प्रवेश करने के लिए एक विश्वासी क्या करता है? *मसीह की उपस्थिति का क्या तरीका है?*

विश्वास

पहले तो विश्वास की बात आती है। सरल भाषा में कहें तो बाइबली विश्वास वह स्वीकार करना है कि जो परमेश्वर ने कहा है और भरोसे और प्रेम में उस पर काम करना है। यीशु के साथ हमारे सम्बन्ध की बुनियाद उस में हमारे विश्वास, उसकी बातों को हमारे मानने और भरोसे और प्रेम से उन पर काम करने पर निर्भर है। उसने कहा, ''थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिए कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे'' (14:19)। उसने हम से प्रतिज्ञा की है कि हम ''देखेंगे'' और ''जीवित'' रहेंगे। केवल उसमें विश्वास करने वाला व्यक्ति ही अपने जीवन में इन प्रतिज्ञाओं को पूरा होने को देख सकता है।

प्रेम

दूसरा, उससे प्रेम करना तस्वीर का भाग है। विश्वास और प्रेम साथ-साथ चलते हैं। एक दूसरे की राह दिखाता है। विश्वास हमें उसके वचनों तक लाता है; प्रेम हमें उसके मन तक लाता है। यीशु से प्रेम करने का अर्थ उसके पीछे चलने के आनन्द में अपने हृदय को उसे देना है। जो कुछ उसने हमारे लिए किया है उसके लिए आभार व्यक्त करते हुए, उसकी भलाई की प्रशंसा करते और उसकी बुद्धि के लिए पवित्र सम्मान उसके चेलों के रूप में अपने आपको उसे देते हैं। हम पढ़ते हैं, ''जिस के पास मेरी आज्ञाएं हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस में प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रकट करूंगा'' (14:21)। यीशु और उसका पिता उनके साथ रहते हैं जो उससे प्रेम करते हैं।

आज्ञापालन

तीसरा, आज्ञापालन आवश्यक है। विश्वास और प्रेम हमें मसीह के वचनों को सराहने, स्वीकार करने और मानने को उकसाते हैं। यीशु ने कहा:

> *यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे। जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं बरन पिता का है, जिस ने मुझे भेजा (14:23, 24)।*

सच्चा विश्वास और प्रेम हमें मसीह की आज्ञा मानने की ओर ले जाता है, जो हमारे भरोसे और प्रशंसा का बिन्दु है। स्वर्ग में पिता के पास उनके लिए जो उसके पुत्र से प्रेम रखते और उसकी आज्ञा मानते हैं एक विशेष प्रेम है।

सारांश

पुराने नियम के सबसे बड़े पकटीकरणों में से एक निर्गमन 33:17-23 में मिलता है। मूसा ने परमेश्वर से विनती की, ''मुझे अपना तेज दिखा दे!'' (निर्गमन 33:18)। परमेश्वर ने कहा, ''मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा'' (निर्गमन 33:19)। मूसा को परमेश्वर का चेहरा देखने की अनुमति नहीं थी पर उसने उसके तेज का पीछा देख लिया। परमेश्वर ने उसे एक चाट्टन की चोटी पर रखा और अपने वहां से गुज़रने तक अपने हाथ से उसे ढांप लिया। फिर उसने अपना हाथ हटाया और मूसा उसके तेज़ की पीठ का दर्शन करने पाया। मूसा को कितना बड़ा अनुभव मिला था! पूरे पुराने नियम में ऐसी घटना केवल यही है।

पुराने नियम की इस घटना से ऊपर वह प्रगटीकरण है जो यीशु हम में से प्रत्येक को देता है यानी हमारे साथ और हमारे अन्दर अपने रहने के द्वारा उसका प्रकाशन। उसकी शिक्षाओं के द्वारा हम उसे पिता के साथ एक के रूप में, हमें अपने लिए स्वीकार करने वाले के रूप में, हमारे अन्दर प्रवेश करने वाले के रूप में और पिता को हमें दिखाने वाले के रूप में देख सकते हैं।

''यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं। जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उसमें सत्य नहीं। पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है: हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें हैं। जो कोई यह कहता है, कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था'' (1 यूहन्ना 2:3-6)।